श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी नमो नमः

नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी नमो नमः
राधा कृष्ण सेवा पाऊं मैं अभिलाषी

जो तुम्हारी शरण आए , मन वांछित फल पाए
कृपा करो हम बन जाएं वृंदावन के वासी।
नमो नमः तुलसी कृष्ण प्रेयसी नमो नमः

और मेरी ये अभिलाषा, निधि वन में दे दो वासा
नयनों से निरखा करूं युगल -रूप- राशि
एक निवेदन मैं करूं, गोपवृंद अनुगामी बनूं
सेवा अधिकार देकर, रखो निज दासी

हरी प्रिया बिन कोई ना तरता,
कृष्ण दास यह विनती करता
राधा गोविंद प्रेम बिना सब जगत त्रासी।
नमो नमः, तुलसी कृष्ण प्रेयसी, नमो नमः
राधा कृष्ण सेवा पाऊं ,मैं अभिलाषी